निर्माण

जल गया है दीप तो अंधियार ढलकरही रहेगा

रोशनी पूँजी नही है, जो तिजोरीमें समाए
यह खिलोना भी न, जिसका दाम हर ग्राहक लगाए
यह पसीने की हँसी है, यह शहीदोंकी उमर है
जब नया सूरज उगाए, तब तडपकर तिलमिलाए
उग रही है लौ को न रोको, ज्योतिके रथको न टोको
यह सुबहका दूत हर तम को निगलकर ही रहेगा. . . .

दीप कैसा हो, कहीं हो, सूर्य का अवतार है वो
धूप मे कुछ भी न, तम मे किंतु पहरेदार है वो
दूर से जो एक ही बस फूँक का वो है तमाशा
देहसे छू जाय तो फिर विप्लवी अंगार है वो
व्यर्थ है दीवार गढना, लाख-लाख कीवाड जडना
मृत्तिका के हाथमे अमृत मचलकर ही रहेगा. . . .

वक्त को जिसने नही समझा, उसे मिटना पडा है
बच गया तलवार मे, तो फूलसे कटना पडा है
क्यों न कितनी भी बडी हो, क्यों न कितनी भी कठीन हो
हर नदी की राहसे चट्टान को हटना पडेगा
उठ, सुबहसे संधि कर लो, हर किरन की मांग भरलो
है जगा इन्सान तो मौसम बदलकर ही रहेगा. . . .